अनुवाद और वाक्य संरचना

- **दयाशंकर पाण्डेय**
(पूर्व सहायक निदेशक)

भारतीय मनीषा में वाकतत्व का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। वैदिक काल से ही यह मीमांसकों, नैयायिकों और वैयाकरणों के अध्ययन और विश्लेषण का महत्वपूर्ण विषय रहा है। ऋग्वेद के एक महत्वपूर्ण सूक्त में वैदिक ऋषि ने वाकतत्व के विषय में बहुत ही गंभीर और विचारपूर्ण विवेचन किया है, जो भाषा विज्ञान की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वाकतत्व ने अपने स्वरूप को उत्तम पुरूष में आत्म विवेचन के रूप में प्रस्तुत किया है। एक मंत्र में वाकतत्व का कथन है:-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधु : पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यवेशयन्तीम् ॥

- "मैं राष्ट्र निर्मात्री शक्ति हूं, मैं वसु तत्वों का संगम अर्थात् संयोग एवं समन्वय करता हूं, मैं विज्ञानमय हूं, मैं यज्ञियों (पावन तत्व, उपास्य तत्व) में सर्वप्रथम हूं। देव (भाषाविद्, शब्द शास्त्री) मुझको नाना रूप देकर नाना प्रकार से प्रस्ततु करके विभिन्न स्थानों में अनेक प्रकार से शक्ति समन्वित करते हुए प्रतिष्ठापित करते हैं।

मानव का संपूर्ण कार्य व्यापार भाषा पर आधारित है। भाषा मानव की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उसके माध्यम से जो भी अभिव्यक्ति होती है, उसका महत्वपूर्ण उपादान वाक्य है। मनुष्य़ का सोचना, बोलना अथवा किसी भाव या विचार का ग्रहण करना वाक्य में होता है। इस प्रकार यह संप्रेषण तथा भावग्रहण-भाषा के इन दोनों प्रकार्यों को संपन्न करने में सहायक होता है। अतः भाषा विज्ञान के अंतर्गत वाक्य के अध्ययन और विश्लेषण के लिए वाक्य विज्ञान जैसी एक संपूर्ण शाखा की प्रतिष्ठा की गई है।

एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है। यह बात वाक्यों के ही माध्यम से की जाती है। अतः अनुवाद के संदर्भ में भी वाक्यों का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। अनुवाद और वाक्य विज्ञान का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। जब हम एक भाषा के संदेश को दूसरी भाषा में अंतरित करते हैं, तब वास्तव में हम इस प्रक्रिया में एक भाषा की वाक्य संरचना को दूसरी भाषा में उसकी प्रकृति के अनुरूप प्रतिस्थापित करते हैं। इस प्रकार अनुवाद में वाक्य संरचना का महत्व स्वयंसिद्ध है।

स्रोत भाषा में कही हुई बात को लक्ष्य भाषा में निकटतम, सहज, समतुल्य अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। इस निकटतम, सहज, समतुल्य पर्याय की खोज की प्रक्रिया में अनुवादक सबसे पहले मूल पाठ का सावधानीपूर्वक पठन करता है और विषय और भाषा - दोनों ही दृष्टियों से उसका विश्लेषण करता है। इस विश्लेषण के माध्यम से वह मूल पाठ में अंतर्निहित अर्थ (संदेश) को ग्रहण करता है। अनुवाद प्रक्रिया का यही सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण है। जब तक अर्थ की

प्रतीति नहीं हो जाती, तब तक अनुवादक का कार्य आगे नहीं बढ़ता। अर्थ की प्रतीति के लिए अनुवादक वाक्य के विभिन्न घटकों (पदों, पदबंधों तथा उपवाक्यों) और वाक्य के विभिन्न अंगों (कर्ता, क्रिया, कर्म, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि) के परस्पर संबंधों का विश्लेषण करता है और अर्थग्रहण करता है। इसी प्रकार अर्थ की प्रतीति हो जाने के बाद, लक्ष्य भाषा में उस अर्थ का अंतरण करने के बाद जब वह पुनर्रचना करने के लिए बढ़ता है, तब एक बार फिर वाक्य संरचना प्रासंगिक हो जाती है। किन्तु यहां उसका सरोकार लक्ष्य भाषा की वाक्य सरंचना से होता है। वह स्रोत भाषा के संदेश की समतुल्य अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप वाक्य की रचना करता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि यहां अर्थ ग्रहण करने के लिए स्रोतभाषा की वाक्य संरचना का समुचित ज्ञान आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर ज्ञात अर्थ को लक्ष्य भाषा में सहज अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए लक्ष्य भाषा की वाक्य संरचना का समुचित ज्ञान भी आवश्यक है।

<u>भाषा संरचना में वाक्यः-</u> व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई मानी जाती है। इसलिए भाषा की संपूर्ण संरचना में वाक्य की भूमिका केंद्रीय होती है।

संदेश संप्रेषण की दृष्टि से प्रोक्ति (discourse) भाषा की सबसे बड़ी इकाई है। प्रोक्ति वक्ता के पूर्ण ज्ञातव्य या विचार-बिंदु का प्रतिनिधित्व करती है और उसे संदर्भ या प्रकरण से जोड़ती है। प्रोक्ति एक अल्पांग वाक्य (minor sentence) भी हो सकती है जैसे - हाँ/ बैठिए, एक पूर्णांक वाक्य भी हो सकती है (जैसे - बैठक में सभी सदस्य आ गए हैं) और एक से अधिक वाक्यों का समूह भी (जैसे - जो पुस्तकें आप को पसंद हो, ले जाइए। बाकी अलमारी में रख दीजिए)। स्मरण रहे कि अर्थ के स्तर पर अनुवाद की सबसे छोटी इकाई प्रोक्ति होती है, साधारण वाक्य नहीं। वाक्य से छोटा घटक उपवाक्य (clause) है। उपवाक्य से छोटा घटक पदबंध (phrase) कहलाता है। उपवाक्य पदबंधों से ही मिलकर बनता है। पदबंध से छोटा घटक है शब्द (word)। शब्दों से मिलकर पदबंध बनता है, जैसे वित्त अनुभाग का प्रभारी अधिकारी।

शब्द से छोटा घटक रूपिम (morpheme) है। ध्वनियों का ऐसा अनुक्रम जो अर्थवान हो और जो अधिक अर्थवान खंड़ों में विभक्त न हो सकता हो रूपिम कहलाता है। यह भाषा की लघुतम अर्थवान इकाई होता है। रूपिम शब्द के रूप में भी हो सकता है, शब्द से छोटी इकाई के रूप में भी । उदाहरण के लिए - सहनशीलता एक शब्द है, लेकिन इसके तीन रूपिम हैं: सहन+शील+ता, लेकिन जिस शब्द में केवल एक ही रूपिम होता है, उसके शब्द और रूपिम में कोई भेद नहीं होता, जैसे कागज, खिड़की, मकान, मेहमान आदि शब्द भी हैं और रूपिम भी।

रूपिम से छोटा घटक स्वनिम (phoneme) है। स्वनिम किसी भाषा में प्रकृत ध्वनियों का एक ऐसा समूह है जिसके सदस्य परस्पर पर्याप्त समानता रखते हैं, लेकिन कोई भी सदस्य दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त नहीं हो सकता। मोटे रूप से किसी भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों को, जिनसे मिलकर उस भाषा के

शब्द बनते हैं, स्वनिम कहा जा सकता है। जैसे हिंदी में प्, फ्, स्, ट् आदि। स्वनिमों से मिलकर रूपिम बनता है, जैसे- प+उ+स्+त्+क्। इन पाँच स्वनिमों से मिलकर एक रुपिम या शब्द बनता है - पुस्तक। अतः स्वनिम भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा एक बहुस्तरीय (Multi-layered) संरचना है। इसका हर स्तर एक-दूसरे से अधिक्रमिक संबंधों के आधार पर जुड़ा है।

प्रोक्ति
|
वाक्य
|
उपवाक्य
|
पदबंध
|
शब्द
|
रुपिम
|
स्वनिम

प्रोक्ति - सप्रेषण के स्तर पर भाषा की मूल इकाई है।

वाक्य - व्याकरणिक संरचना के स्तर पर भाषा की सबसे बड़ी इकाई। भावाभिव्यक्ति की लघुतम इकाई।

रुपिम - भाषा की लघुतम अर्थवान इकाई ।

स्वनिम - भाषा की लघुतम संरचनात्मक इकाई।

<u>वाक्य</u>- सामान्यतः सार्थक और सुव्यस्थित पद - समूह को वाक्य कहते हैं। प्रख्यात हिंदी वैयाकरण कामता प्रसाद गुरू ने हिंदी व्याकरण में वाक्य की परिभाषा इस प्रकार दी है — "एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द-समूह वाक्य कहलाता है।" लगभग यही बात आर्चाय विश्वनाथ द्वारा साहित्य दर्पण में दी गई निम्नलिखित परिभाषा से भी ध्वनित होती है –

"वाक्य स्यात् योग्यताकांक्षा आसत्तियुक्तः पदोच्चः ।"

अर्थात् योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति (वाक्य में पास-पास रहने वाले शब्दों का परस्पर संबंध)

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं में वाक्य की दो अनिवार्य शर्तों का उल्लेख किया गया है - (क) वाक्य शब्दों का समूह होता है, (ख) उससे पूर्ण विचार की अभिव्यक्ति या आकांक्षा (जिज्ञासा) की संतुष्टि होती है। विचार की अभिव्यक्ति के लिए वाक्य में प्रयुक्त पदों को सार्थक और योग्य होना चाहिए तथा उन

पदों में परस्पर सान्निध्य होना चाहिए। वाक्य कभी तो पदों का समूह हो सकता है और कभी नहीं भी हो सकता है। संदर्भ के अनुसार कभी-कभी एक ही पद से पूर्ण संदेश का बोध हो जाता है। जैसे – हां, नहीं, आओ, जाओ, लो, दो आदि । जिसमें वाक्य के सारे घटक उपस्थित हों उसे पूर्णांग वाक्य कहते हैं और जिसमें सभी घटक उपस्थित न हों उसे अल्पांग वाक्य कहते हैं। फ्राइज अपनी पुस्तक "द स्ट्रक्चर ऑफ इंगलिश" में पाश्चात्य वैयाकरणों द्वारा दी गई परिभाषा उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि "पूर्ण विचारों के धोतक पद-समूह को वाक्य कहते हैं।" 'विचार की पूर्णता' का अभिप्राय मात्र व्याकरणिक पूर्णता से है। विचार या बात एक अविच्छिन्न धारा प्रवाह है, उसमें कोई वाक्य वैचारिक दृष्टि से कैसे पूर्ण हो सकता है।

<u>वाक्य का स्वरूपः-</u> भारत की प्राचीन परंपरा के प्रतिनिधि और संसार के महानतम वैयाकरण पाणिनि ने वाक्य की परिभाषा 'एक तिङ्' सूत्र से की है जिसका अर्थ है - "क्रिया पद ही वाक्य है।" आचार्य किशोरी दास वाजपेयी अपनी पुस्तक 'हिंदी शब्दानुशासन' में लिखते हैं, वाक्य में कम से कम एक क्रिया आवश्यक होती है। उसके बिना वाक्य नहीं बन सकता।

वाक्य (sentence) एक बहुआयामी (multidimensional) संरचना है। इसे हम व्याकरणिक इकाई के रूप में भी देख सकते हैं, अर्थ की एक इकाई के रूप में भी देख सकते हैं और संरचना की एक इकाई के रूप में भी। अर्थ की एक इकाई के रूप में वाक्य एक अपेक्षाकृत पूर्ण और स्वतंत्र मानक उक्ति (utterance) है, जिसकी पूर्णता और स्वतंत्रता इस बात में है कि यह अकेले प्रयुक्त होता है या हो सकता है। इस दृष्टि से वाक्य एक स्वतंत्र अर्थपूर्ण उक्ति (Independent meaningful utterance) है।

संरचनात्मक इकाई के रूप में वाक्य एक ऐसी संरचना है जो कुछ घटकों (शब्दों, पदबंधों) से मिलकर बना है। ब्लूम फील्ड के अनुसार, वाक्य एक ऐसी संरचना है जो किसी उक्ति विशेष में अपने से बड़ी किसी संरचना का अंग नहीं बन सकती। इस दृष्टि से वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है।

व्याकरणिक इकाई के रूप में वाक्य ऐसी रचना है जिसमें कम से कम दो अवयवों (Constituents) का होना जरूरी है - 1. उद्देश्य (Subject) और 2. विधेय (predicate) । उद्देश्य वाक्य का वह अंश है जिसके बारे में कुछ कहा जाए। उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए वह विधेय कहलाता है। जैसे -

उद्देश्य (Subject)	**विधेय (predicate)**
सभी कर्मचारी	कार्यालय में काम कर रहे हैं।
सभी फाइलें	अधिकारी के पास भेज दी गई हैं।

उद्देश्य हमेशा संज्ञा पदबंद के रूप में होता है, जिसमें संज्ञा या संज्ञा का विस्तार दोनों शामिल है। विधेय हमेशा क्रिया के रूप में उद्देश्य के बाद प्रयुक्त होता है जिसमें मोटे रूप से क्रिया, कर्म, पूरक क्रिया, विशेषण आदि शामिल होते हैं।

<u>वाक्य के आवश्यक तत्व</u>

अंग्रेजी भाषा के व्याकरण में Syntax के अन्तर्गत वाक्य रचना के बारे में विचार किया जाता है। 'syntax' शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों Syn+taxes के योग से बना है। Syn का अर्थ है together (साथ-साथ)+ और Taxes का अर्थ है Ordering (क्रम में रखना)। अतः Syntax का अर्थ हुआ - The ordering or arrangement of orders अर्थात् वाक्य में शब्दों को उचित और सही क्रम में रखकर सही अंग्रेजी लिखना Syntax कहलाता है।

Syntax को प्रायः तीन भागों में बांटा जाता है।

1. Order or position of a word in a sentence.
2. Government of power which a word possesses over other.
3. Concordance or agreement of words in number, person, gender and case in a sentence.

भारतीय वैयाकरणों ने वाक्य के छः आवश्यक तत्व बताएं हैं -

1. सार्थकता
2. योग्यता
3. आकांक्षा की संतुष्टि
4. सन्निधि
5. अन्विति
6. पदक्रम

1. <u>सार्थकता</u> - सार्थक शब्दों से ही वाक्य की रचना हो सकती है, निरर्थक शब्दों से नहीं।

2. <u>योग्यता</u> - वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में संदेश को अभिव्यक्त करने की योग्यता होनी चाहिए। चूंकि विभिन्न शब्दों के समन्वय से ही एक पूर्ण वाक्य की रचना होती है जिससे एक पूरा संदेश मिलता है, इसलिए यह आवश्यक है कि वाक्य में प्रयुक्त हर शब्द में वांछित अर्थ वहन करने की योग्यता हो। "पौधे को आग से सींचो" जैसे किसी वाक्य की रचना नहीं हो सकती; क्योंकि इसमें "आग" अयोग्य शब्द है, जिसमें सींचने की योग्यता नहीं है।

3. <u>आकांक्षा की संतुष्टि</u> - आकांक्षा की संतुष्टि अर्थात् जिससे एक पूरी बात की जानकारी मिल जाए। वैसे तो विचारों के निरंतर प्रवाह में बात भी अधूरी ही रहती है, तो फिर बात का अवयव कैसे पूरा हो सकता है ? यह पूर्णता मात्र व्याकरण की दृष्टि से है। इसी सीमित संदर्भ में वाक्य को पूर्ण लघुतम इकाई कहा गया है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने वाक्य के संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा है — 'वाक्य पूरी बात की तुलना में अपूर्ण होते हुए भी अपने आप में पूर्ण लघुतम स्वतंत्र भाषिक इकाई है।' बात पूरी होने के लिए व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य में एक पूर्ण क्रिया (समापिका क्रिया) का होना आवश्यक होता है। सामान्यतः जब तक क्रिया का प्रयोग नहीं होता तब तक आकांक्षा संतुष्ट नहीं होती। जैसे "राम" मात्र कहने से यह जानने की आकांक्षा बनी रहती है कि "राम" कौन है, राम के बारे में क्या कहना है, आदि। "राम , घर" कहने से भी आकांक्षा संतुष्ट नहीं होती। जब हम यह सुनते हैं कि "राम घर जाता है" तब

हमें पूरा संदेश प्राप्त हो जाता है। किन्तु कभी-कभी यह क्रिया अनुपस्थित रहती है, तो भी पूर्व संदर्भ से हम पूरी बात समझ लेते हैं। जैसे आप खाना खाते समय "रोटी", "पानी" या ऐसे ही और किसी शब्द के माध्यम से कोई चीज मांगते हैं तब सुनने वाला पूरी बात उस क्रिया विहीन वाक्यांश के माध्यम से भी समझ लेता है। उस दिशा में वह एक शब्द ही पूरे वाक्य "मुझे रोटी दो" का अर्थ देता है।

अतः अर्थ की पूर्णता ही वाक्य की कसीटी है। इसलिए यदि किसी प्रकार अर्थ की पूर्णता हो जाती है तो एक पद भी वाक्य हो सकता है। इसी कारण से लम्बे पदों का समुदाय भी वाक्य नहीं बन पाता यदि उसका अर्थ अपूर्ण हो। यदि किसी पद-समूह को किसी दूसरे पद या पदों की अपनी अर्थ की पूर्ति के लिए आकांक्षा बनी रहती है तो उसे वाक्य नहीं कह सकते। संरचना की दृष्टि से प्रधान उपवाक्य से जुड़े मध्यवर्ती उपवाक्यों के बारे में भी यही बात है।

अर्थ की पूर्णता को ही ध्यान में रखते हुए वैयाकरणों ने महावाक्य की कल्पना की है। यह महावाक्य कई उपवाक्यों के योग से बना एक वाक्य भी हो सकता है और कई वाक्यों के योग से बना अनुच्छेद या अध्याय हो सकता है या पूरी रचना भी हो सकती है। आधुनिक भाषा वैज्ञानिकों ने महावाक्य के समानान्तर "प्रोक्ति" की संकल्पना की है, जो वाक्योपरि संरचना है। अनुवाद के संदर्भ में यह और भी प्रासंगिक है। किसी पद का अर्थ पूर्ण वाक्य के संदर्भ से निश्चित किया जाता है और वाक्य का अर्थ अनुच्छेद के संदर्भ में, अनुच्छेद का अध्याय के और अध्याय का सम्पूर्ण रचना के संदर्भ में अर्थ निश्चित किया जाता है। इसीलिए किसी जटिल वाक्य को विभाजित कर उसके सम्पूर्ण संदेश को छोटे-छोटे कई वाक्यों में अभिव्यक्त किया जा सकता है। किन्तु सावधानी इस बात की बरतनी होती है कि अलग-अलग बनाए गए इन वाक्यों में एकवाक्यता हो तभी तो एक पूरी बात को वे अभिव्यक्त कर सकेंगे और आकांक्षा संतुष्ट हो सकेगी।

4. **<u>सन्निधि</u>** - सन्निधि का अर्थ है निकटता। लिखित रूप में वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में परस्पर निकटता होनी चाहिए। ये शब्द एक के बाद एक के क्रम में पास-पास लिखे होने चाहिए। इसी प्रकार बोलते वक्त भी शब्द एक के बाद एक के क्रम में तुरंत उच्चारित होने चाहिए। वाक्य के पदों के बीच देश-काल का अंतराल नहीं होना चाहिए। तभी इन शब्दों का परस्पर संबंध स्थापित करके अर्थ ग्रहण किया जा सकता है।

एक बात यहां सुस्पष्ट कर देना आवश्यक है कि शब्द वाक्य में प्रयुक्त होते ही पद का रूप धारण कर लेते हैं। वे वाक्य में आते ही संबंध तत्व और विभिन्न व्याकरणिक कोटियों से नियंत्रित हो जाते हैं। पाणिनि ने पद की परिभाषा 'रउम् तिङन्तं पद' के रूप में दी है। अर्थात् काल तथा क्रिया विभक्तियों के योग को पद कहते हैं। वाक्य से अलग रहकर इन शब्दों से कोई निश्चित संदेश नहीं मिलता। जैसे : आप, राम, आम, खाना जैसे अलग-अलग शब्दों से कोई संदेश ग्रहण नहीं कर पाते किन्तु

जब इन तीनों शब्दों को कर्ता, कर्म और क्रियापद बना कर वाक्य में प्रयुक्त करते हैं, तब "राम आम खाता है" वाक्य की रचना हो जाती है और तीनों पदों के योग से एक निश्चित संदेश प्राप्त हो जाता है।

वाक्य में प्रयुक्त पदों या खंडों को वाक्य का अवयव कहते हैं। किसी वाक्य का ठीक अर्थ जानने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वाक्य के किस अवयव का निकटतम अवयव कौन-सा है। इसी आधार पर अर्थ की इकाइयां बनती हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य को देखें:-

राम का मित्र मोहन	श्याम के घर	जा रहा है ।
1	2	3

उपर्युक्त वाक्य में कुल 10 अवयव हैं जिन्हें निकटता के आधार पर तीन खंडों में विभाजित किया गया है। वाक्य में 'मोहन' और 'श्याम' पास-पास होते हुए भी एक दूसरे के निकटतम अवयव नहीं हैं। 'मोहन' 'राम का मित्र' पदबंध का निकटतम अवयव है, जबकि 'श्याम' 'घर' का निकटतम अवयव है। 'राम का मित्र मोहन' वाक्य का उद्देश्य होने के कारण अन्य दो खंडों से अलग है। 'श्याम के घर' और 'जा रहा है' — दोनों ही विधेय के अंश होने के कारण एक दूसरे के निकटतम अवयव हैं।

इसी प्रकार अंग्रेजी की एक संकल्पना देखें:-

Memorandum and Articles of Association.

इसके अवयवों के आधार पर दो प्रकार से खंड किए जा सकते हैं:-

1. Memorandum and Articles of Association.
2. Memorandum of Association and Articles of Association.

संदर्भ के अनुसार क्रम संख्या दो पर उल्लिखित खंड सही है। इसके अनुसार हिंदी में इसके लिए पर्याय निर्धारित किया गया है-

संगम ज्ञापन और संगम अनुच्छेद। ऐसा इसलिए हुआ कि Memorandum और Articles दोनों ही Association के निकटतम अवयव है।

जब दो संज्ञाएं and संयोजक के जुड़ी हों और उनसे पहले कोई विशेषण हो तो यह विचार कर लेना चाहिए कि वह विशेषण दोनों संज्ञाओं का निकटस्थ है या केवल पहली का। यदि दोनों का निकटस्थ हो तो उसका हिंदी में अनुवाद करते समय ऐसे पर्याय का प्रयोग करना चाहिए जो दोनों के लिए उपयुक्त हो। यदि दोनों के लिंग भिन्न हों, तो तदनुसार पर्याय निर्धारित करने चाहिए, जैसे -

Learned men and women

विद्वान पुरूष और विदुषी महिलाएं।

यदि Learned केवल men का निकटतम अवयव हो तो इसका अनुवाद भिन्न प्रकार से होगा -

विद्वान पुरूष और महिलाएं ।

He fell in love with her में निकटतम अवयव का न ध्यान रखें तो इसका अनुवाद होगा - "वह उसके साथ प्रेम में गिरा" जो हास्यास्पद है। किंतु यदि निकटतम अवयव की दृष्टि से विचार करें, तो आप पाएंगे कि to fall in love with एकआर्थी इकाई है, जिसका अर्थ है "प्यार करना"। तदनुसार इसका अनुवाद होगा - वह उससे प्यार करने लगा। मुहावरों और लोकोक्तियों के शब्द, वाक्य के अन्य शब्दों से अलग होते हैं। ये आपस में निकटतम होते हैं, इसलिए उनका हमेशा एकआर्थी इकाई के रूप में अलग अनुवाद होना चाहिए। हर शब्द का अलग-अलग अर्थ करने से अनर्थ हो जाता है।

5. **अन्विति (Concordance)** – वाक्य के पदों के बीच व्याकरणिक अनुरूपता को अन्विति कहते हैं।

वाक्य के विभिन्न पदों में समुचित अन्वय होना चाहिए। अन्वय का अर्थ है - संगति तथा संबंध। लिंग, वचन, पुरूष, विभक्ति आदि की दृष्टि से प्रयुक्त पदों में संगति होनी चाहिए। कहने का अभिप्राय यह है कि वाक्य रचना व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होनी चाहिए।

हिंदी भाषा के वाक्य रचना में अन्विति के मुख्य नियम निम्नलिखित हैं:-

1. कर्ता + क्रिया में वचन और लिंग की अन्विति

लड़का जाता है। लड़के जाते हैं।
लड़की जाती है। लड़कियाँ जाती हैं।

अंग्रेजी भाषा में भी वाक्य-रचना में केवल कर्ता+क्रिया की अन्विति होती है, लिंग की नहीं:-

The boy reads, The Boys Read.
The girl reads, The Girls read.

2. कर्म+क्रिया - वचन और लिंग की अन्विति

यदि परसर्ग (ने) युक्त कर्ता के साथ परसर्ग (को) रहित कर्म हो तो क्रिया का वचन कर्म के साथ होता है, कर्ता के साथ नहीं -

राम ने रोटी खाई। राम ने चावल खाए।
सीता ने पत्र पढ़ा। सीता ने चिट्ठी पढ़ी।

परंतु परसर्ग (ने) युक्त कर्ता के साथ परसर्ग (को) युक्त कर्म हो तो क्रिया का अन्वय कर्म साथ नहीं होता। क्रिया पुल्लिंग+एक वचन में होती है -

राम ने लड़की को देखा। राम ने लड़कियों को देखा।
सीता ने लड़की को देखा। सीता ने लड़कियों को देखा।

3. एक से अधिक कर्ता+क्रिया की अन्विति

(i) यदि किसी वाक्य में अनेक कर्ता हों परंतु उनका लिंग समान हो तो उनके साथ क्रिया बहुवचन में आती है- राम, भरत और लक्ष्मण गए। राधा, सीता और सावित्री गईं।

(ii) यदि कर्ता पदों के लिंग में भिन्नता हो तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में होती है -
राम, सीता और लक्ष्मण गए। राम, श्याम और राधा गए।

<u>लिंग</u> - प्राकृतिक लिंग और व्याकरणिक लिंग सर्वदा समान नहीं होते। **संस्कृत में "दारा" (स्त्री) पुल्लिंग है, तो "कलत्र" (स्त्री) नपुसंक लिंग। इसलिए ऐसी भाषाओं में जिनमें व्याकरणिक लिंग है, अनुवाद करते समय लिंग विधान को ध्यान में रखना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का यह वाक्य लें - - The moon has hid her face behind clouds आप जानते हैं कि हिंदी में moon का पर्याय 'चांद' पुल्लिंग है, किन्तु अंग्रेजी में moon स्त्रीलिंग। इसलिए अनुवाद करते समय हिंदी में चांद के लिए पुल्लिंग का ही प्रयोग किया जाएगा। इसी प्रकार "Death lays his icy hands even on kings" का यदि हिंदी में अनुवाद करना हो तो death के पर्याय 'मृत्यु' के लिए स्त्रीलिंग की क्रिया का प्रयोग किया जाएगा। इसी प्रकार अंग्रेजी में ship, spring, autumn स्त्रीलिंग है, जबकि हिंदी में इसके समानार्थी जहाज, वसन्त और पतझड़ पुल्लिंग हैं। अंग्रेजी में Winter पुल्लिंग है, किन्तु हिंदी में 'जाड़ा' स्त्रीलिंग है। अतः अनुवादक को स्रोत तथा लक्ष्य भाषा के व्याकरणिक लिंग से सम्बद्ध प्रयोग संबंधी नियमों एवं विशेषताओं से परिचित होना चाहिए तथा अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के व्याकरणिक विधान के अनुरूप रचना करनी चाहिए।**

<u>वचन</u> - वचन सम्बन्धी नियम भी हर भाषा के अपने होते हैं। अनुवादक को इस संबंध में सतर्क रहना चाहिए। उदाहरण के लिए हिंदी में दर्शन, प्राण, हस्ताक्षर का प्रयोग पुलिंग बहुवचन में किया जाता है। जैसे -

1. बहुत दिनों बाद आपके दर्शन हुए।
2. उसके प्राण निकल गए।
3. ये उनके हस्ताक्षर हैं।

अंग्रेजी में sheep, deer, cod आदि कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके एक वचन और बहुवचन के रूप समान होते हैं। कुछ संज्ञाओं का अंग्रेजी में प्रयोग हमेशा बहुवचन में ही होता है, जैसे - spectacles, scissors, pants, trousers, billiards, measles, mumps और annals आदि। हिंदी में इनका पर्याय रखते समय इनके वचन का निर्धारण हिंदी के व्याकरणिक विधान के अनुसार होना चाहिए। हिंदी में कुछ शब्द बहुवचन में होने पर भी एकवचन रूप में वाक्य में आते हैं — वह दस दिन तक नहीं आएगा, उसके पिता एक सौ वर्ष तक जीवित रहे। हिंदी में एकवचन के स्थान पर आदर के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे अंग्रेजी वाक्य Nehru was a very good speaker का हिंदी अनुवाद "नेहरू बड़े अच्छे वक्ता थे" होगा। हिंदी में यह बात सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रिया विशेषण पर भी समान रूप से लागू होती है, जैसे -

साधारण	**आदरसूचक**
वह	वे
आ रहा है	आ रहे हैं
लम्बा	लम्बे
दौड़ता आया	दौड़ते आए

अतः अनुवादक को लक्ष्य भाषा के नियमों के अनुसार ऐसी स्थितियों में स्रोत भाषा के वचन में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर लेना चाहिए।

इसी प्रकार पुरुष, कारक चिह्नों और क्रियाओं के काल, वृत्ति और पक्ष आदि की दृष्टि से भी अन्विति का ध्यान रखना चाहिए।

<u>पदक्रम</u> - हर भाषा में वाक्य में पदों का विशेष क्रम होता है। हिंदी भाषा में कर्ता+कर्म+क्रिया (S.O.V) की व्यवस्था है, जबकि अंग्रेजी में कर्ता+क्रिया+कर्म (S.V.O) की व्यवस्था है। राम किताब पढ़ता है
S O V
Ram reads a book. अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि स्रोत भाषा के पदक्रम की छाया
S V O
भाषा में किए गए अनुवाद पर न पड़े। अंग्रेजी में यदि तीनों पुरूष साथ आएं तो पहले मध्यम पुरूष का क्रम रखा जाता है फिर अन्य पुरूष और सबसे अन्त में उत्तम पुरूष का क्रम रखा जाता है (you, he and I)। इसके विपरीत हिंदी में ऐसा कोई निश्चित विधान नहीं है।

A white flower garland का हिंदी पर्याय "एक सफेद फूलों की माला" न होकर "सफेद फूलों की (एक) माला" होगा। इसी प्रकार a white cloth bag के लिए हिंदी में "एक सफेद कपड़े का थैला" न कहकर " सफेद कपड़े का (एक) थैला" कहना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि अखबारों के शीर्षकों में असावधानीवश पदक्रम की गलती के कारण हास्यास्पद रचना हो जाती है, जैसे - सदन में विधायक द्वारा अफीम की तस्करी के बारे में चर्चा। स्पष्ट है कि पदक्रम की गलती से वांछित सन्देश विकृत हो गया है। विधायक द्वारा सदन में चर्चा की गई है न कि अफीम की तस्करी। अतः इसका सही पदक्रम होना चाहिए - अफीम की तस्करी के बारे में विधायक द्वारा सदन में चर्चा।

कभी-कभी कुछ विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिए वाक्य के पदों का क्रम परिवर्तित कर दिया जाता है - तो मैं जाता हूं। तो जाता हूं मैं।
(कर्ता) (क्रिया) (क्रिया) (कर्ता)

हिंदी में सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के बाद ही किया जाता है। किन्तु अंग्रेजी में सर्वनाम का प्रयोग कभी-कभी संज्ञा से पहले भी करने का रिवाज़ है। अतः ऐसे वाक्यों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय संज्ञा को पहले रखना चाहिए, फिर उसके बाद सर्वनाम। उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित वाक्य देखें -
As he was a realist, fielding depicted a true picture of his contemporary society.
इसका हिंदी में अनुवाद निम्न प्रकार से किया जाएगा -

"चूंकि फील्डिंग यथार्थवादी साहित्यकार थे, इसलिए उन्होंने समसामयिक समाज का यथार्त चित्र प्रस्तुत किया।"

ऐसा करना इसलिए आवश्यक होता है कि एक बार संज्ञा का उल्लेख हो जाने के बाद ही यह पता चलता है कि सर्वनाम उसी संज्ञा का निर्देश कर रहा है। संज्ञा से पहले सर्वनाम का प्रयोग करने से ऐसा प्रतीत होता है कि वह सर्वनाम संबंधित संज्ञा से भिन्न किसी संज्ञा का निर्देश कर रहा है।

अतः अनुवादक को वाक्य रचना करते समय पदक्रम का समुचित रूप से ध्यान रखना चाहिए। जिससे कि उस रचना से वही अर्थ ध्वनित हो जो अर्थ वह अभिव्यक्त करना चाहता है।

<u>पदबंध (Phrase)</u> - पदबंध में एक से अधिक पद होते हैं। जब वाक्य में एक से अधिक पद मिलकर एक ही व्याकरणिक इकाई की रचना करें, तो इन पदों के योग को पदबंध कहते हैं। पदबंध के निम्नलिखित भेद हैं:-

1. **संज्ञा पदबंध (Noun phrase)** – संज्ञा का काम करने वाले पदबंध को संज्ञा पदबंध कहा जाता है। जैसे - कड़ी मेहनत करने वाला सफल होगा।

इस वाक्य में रेखांकित अंश पदों का समूह है। सभी पद मिलकर पदबंध के रूप में संज्ञा का कार्य कर रहे हैं।

2. **विशेषण पदबंध (Adjective phrase)** – विशेषण का काम करने वाले पदबंध को विशेषण पदबंध कहते हैं। जैसे - कड़ी मेहनत करने वाला लड़का सफल होगा।

रेखांकित अंश सामूहिक रूप से संज्ञा पद लड़का की विशेषता बता रहा है।

3. **क्रिया विशेषण पदबंध (Adverb phrase)** – क्रिया विशेषण का काम करने वाले पदबंध को क्रिया विशेषण पदबंध कहा जाता है। जैसे - कड़ी मेहनत करने वाला लड़का कभी-न-कभी अवश्य सफल होगा।

इस वाक्य में रेखांकित पद समूह क्रिया की विशेषता बता रहा है। इस कारण यह पद समूह क्रिया विशेषण पदबंध है।

4. **क्रिया पदबंध (Verb phrase)** - क्रिया का कार्य करने वाले पदबंध को क्रिया पदबंध कहा जाता है। जैसे - कड़ी मेहनत करने वाला लड़का कभी न कभी अवश्य सफल हो कर रहेगा।

रेखांकित पद समूह क्रिया का कार्य कर रहा है।

बाह्य संरचना और आन्तरिक संरचना

प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक चामस्की ने वाक्य-संरचना के दो भेद दिए हैं - बाह्य सरचना (surface structure) और आन्तरिक संरचना (Deep Structure)। भाषाओं में वाक्यों के सामान्यतः एक ही अर्थ होते हैं। किन्तु कुछ वाक्य ऐसे भी होते हैं, जिनके एकाधिक अर्थ होते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखें - शीला गाने वाली है। इस वाक्य के दो अर्थ हैं - (1) शीला अब गाएगी, (2) शीला गाने का काम करती है। इसी प्रकार 'वह डॉक्टर होगा' वाक्य के दो अर्थ हैं (1) वह (बड़ा होकर) डॉक्टर होगा (2) (शायद) वह डॉक्टर होगा।

बाह्य संरचना में एक ही वाक्य होते हुए भी आन्तरिक संरचना में यहाँ दो वाक्य हैं। ऐसे अनुवाद करते समय अनुवादक को यह विचार कर लेना चाहिए कि वाक्य कहीं एक से अधिक अर्थों वाला तो नहीं है, और यदि है तो आन्तरिक संरचना के आधार पर उस प्रसंग में उसका कौन-सा अर्थ ग्राह्य है। यह निश्चित कर लेना चाहिए और अभीष्ट अर्थ का ही अनुवाद करना चाहिए। अनेकार्थी वाक्यों में एक अर्थ के स्थान पर दूसरे को लेकर अनुवाद करने की गलती हो सकती है। अतः अनुवादक को इसके बारे में सतर्क रहना चाहिए। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के निम्नलिखित वाक्य देखें -

Flying airoplane is dangerous

इसके दो अनुवाद हो सकते हैं -

1. उड़ता हुआ जहाज खतरनाक है।
2. जहाज उड़ाना खतरनाक है।

इसी प्रकार Shooting of the hunter के आन्तरिक संरचना के आधार पर दो अनुवाद हो सकते हैं -

1. शिकारी का मारना
2. शिकारी को मारना

<u>वाक्य संरचना के आधार पर वाक्य के विभिन्न प्रकार और उनका अनुवाद</u>

वाक्य संरचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं:-

1. सरल वाक्य (simple sentence) – मैंने दवा खाई ।
2. संयुक्त वाक्य (compound sentence) – मैंने खाना खाया और दवा पी।
3. मिश्र वाक्य (complex sentence) – मैंने वह दवा खाई जो तुम लाए थे।

1. **<u>सरल वाक्य</u>** - सरल वाक्य के अंतर्गत वे सभी वाक्य आते हैं जिनमें कोई दूसरा वाक्य न जुड़ा हो। वाक्य का आंतरिक विश्लेषण सरल वाक्य के ही आधार पर किया जाता है। किसी भी भाषा में वाक्य-सांचों (sentence pattern) का निर्धारण भी सरल वाक्यों के आधार पर ही होता है।

2. **<u>संयुक्त वाक्य</u>** - जब किसी वाक्य के दो या अधिक उपवाक्य समानाधिकरण समुच्चय बोधक शब्दों (coordination conjunctions) जैसे - और, लेकिन, या, and, but, or आदि के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं तो वह वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाता है। जैसे -

पिताजी दुकान में हैं और माताजी खाना बना रही हैं।

It was raining outside but we were safe in the car.

(संयुक्त वाक्य के उपवाक्यों में समस्तरीय (Coordinating) संबंध होता है, अर्थात् वे एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होते, जैसा कि मिश्र वाक्य में होता है।)

3. **<u>मिश्र वाक्य</u>** - मिश्र वाक्य में कम से कम दो उपवाक्य होते हैं, जिनमें से एक मुख्य या स्वतंत्र (Main/principal) उपवाक्य होता और दूसरा गौण या आश्रित (Subordinate) उपवाक्य होता है। इनके बीच आश्रय और आश्रित का संबंध होता है। आश्रित उपवाक्य कुछ समुच्चय बोधक शब्दों (conjunctions) जो, जहां, कि, ताकि, Who, that, where, which, so that आदि द्वारा मुख्य उपवाक्य से जुड़े होते हैं,

जैसेः-

मैंने कल एक आदमी देखा जो बिल्कुल आप की तरह था। (who)

उसने कहा कि मैं कल यहां आऊँगा। (that)

अब हम वहीं मिलेंगे जहाँ पर अगली बैठक होगी। (where)

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैः- सज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रिया विशेषण उपवाक्य।

सरल वाक्य की ही तरह संयुक्त वाक्य के भी अनुवाद में कोई कठिनाई नहीं होती है। संयुक्त वाक्य में समानपदीय उपवाक्य, संयोजकों (Conjunctions) से जुड़े होते हैं इसलिए उनके अनुवाद में कोई

खास कठिनाई नहीं होती। विशेष कठिनाई मिश्र वाक्यों के अनुवाद में होती है, जहां प्रधान उपवाक्य के अतिरिक्त कई-कई उपवाक्य भरे होते हैं। हिन्दी में सरल या संयुक्त वाक्य लिखने या बोलने की परम्परा अधिक है, जबकि अंग्रेजी में मिश्र वाक्यों की परम्परा अधिक है। अंग्रेजी और हिन्दी की मिश्र वाक्य की संरचनाओं में एक प्रमुख अन्तर यह भी है कि अंग्रेजी के उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के कर्ता और क्रिया के बीच अन्तर्विष्ट होते हैं, जबकि हिन्दी में एक पूरा उपवाक्य अपने सभी पदों, कर्ता, क्रिया, कर्म के साथ पृथक् होता है। अतः अनुवाद करते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि अनूदित वाक्य की संरचना हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप हो। जैसे - The man who fell from the tree yesterday has died in the hospital today. इसका अनुवाद कुछ लोग हिन्दी में अंग्रेजी की तर्ज़ पर इस प्रकार करते हैं - वह आदमी जो कल पेड़ से गिरा था आज अस्पताल में मर गया। हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार इसका ठीक अनुवाद इस प्रकार किया जाना चाहिए - **जो आदमी कल पेड़ से गिरा था, आज अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गयी अथवा आज अस्पताल में उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी, जो कल पेड़ से गिरा था।** इसी प्रकार एक अन्य वाक्य देखें -

The application of Shri Ramesh Chandra, an L.D.C. from your office who is under training in this institute, is being forwarded herewith for further necessary action.

इस वाक्य का अनुवाद अंग्रेजी के वाक्य के समानान्तर प्रायः निम्न प्रकार से दिया जाता है - आपके कार्यालय के अवर श्रेणी लिपिक श्री रमेश चन्द्र जो इस समय इस संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, का आवेदन आवश्यक कार्रवाई के लिए अग्रेषित किया जाता है। इस वाक्य में रमेश चन्द्र और उनका आवेदन दोनों ही एक दूसरे से अलग हो गए हैं। कर्ता क्रिया से काफी दूर हो गया है, जिससे पढ़ने में यह वाक्य अटपटा लग रहा है। यह स्थिति तब और भी अधिक अटपटी हो जाती है, जब मिश्र वाक्य में कई-कई उपवाक्य होते हैं। अनुवाद करते समय प्रयास यह होना चाहिए कि हर उपवाक्य अपने कर्ता, क्रिया, कर्म आदि घटकों के साथ सुस्पष्ट रूप से अलग-अलग हों, किन्तु उन्हें उपयुक्त संयोजक शब्दों के माध्यम से इस प्रकार से जोड़ा गया हो कि उनसे सुस्पष्ट अर्थ ध्वनित होता हो। दुरूहता शब्द के कारण नहीं होती, बल्कि वाक्य के अटपटेपन के कारण होती है। उपर्युक्त वाक्य का अनुवाद दो सरल, वाक्यों में इस प्रकार किया जा सकता है -

आपके कार्यालय के अवर श्रेणी लिपिक श्री रमेश चन्द्र इस समय इस संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उनका आवेदन आवश्यक कार्रवाई के लिए अग्रेषित किया जा रहा है।

अंग्रेजी के उपर्युक्त मिश्र वाक्य को हिन्दी में सरल वाक्य में इस प्रकार से भी अनूदित किया जा सकता है -

आपके कार्यालय से इस संस्थान में प्रशिक्षण पर आए श्री रमेश चन्द्र, अवर श्रेणी लिपिक का आवेदन आवश्यक कार्रवाई के लिए अग्रेषित किया जा रहा है।

कभी-कभी स्रोत सामग्री के उपवाक्य के लिए लक्ष्य भाषा में उपवाक्य का प्रयोग न करके पदबन्ध का भी प्रयोग करते हैं। जैसे - I heard what he said - मैंने उसकी बात सुनी।

I have faith in what you say - मुझे आपकी बात पर विश्वास है।

भाव या अर्थ के आधार पर वाक्यों के विभिन्न प्रकार और उनका अनुवाद

भाव या अर्थ के आधार पर वाक्यों के स्वीकारात्मक, प्रश्नवाचक, निषेधात्मक, आज्ञासूचक, इच्छासूचक, आश्चर्यसूचक, संकेतसूचक आदि भेद किए गए हैं। इन वाक्यों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय अनुवादक को उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए आज्ञा, इच्छा, प्रश्न, निषेध और आश्चर्य आदि का भाव मूल पाठ के अनुसार सुरक्षित रखना चाहिए।

1. **स्वीकारात्मक या विधान सूचक वाक्य (assertive sentence)** - इस वाक्य से किसी कार्य के होने की सूचना मिलती है। जैसे - सीता पुस्तक पढ़ती है।

2. **निषेधसूचक वाक्य -** इस वाक्य में किसी कार्य के न होने की सूचना मिलती है। जैसे - सीता पुस्तक नहीं पढ़ती है।

स्वीकारात्मक, विधान सूचक और निषेधात्मक वाक्यों के अनुवाद में कोई कठिनाई नहीं है। किंतु प्रश्नवाचक, आज्ञा सूचक, इच्छा सूचक और आश्चर्य सूचक, संकेत सूचक वाक्यों के अनुवाद में कुछ विशेष प्रकार की कठिनाइयां आती हैं। आइए इन वाक्यों के बारे में कुछ चर्चा करें और इनके अनुवाद के कुछ उदाहरण देखें -

3. **प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative sentence)** - अंग्रेजी के प्रश्नवाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं -

1. वे वाक्य जो प्रश्नवाचक शब्द Which, what, who, whom, when, where आदि से शुरू होते हैं। इनका हिंदी में अनुवाद करते समय कौन, क्या, किसे, कब, कहां आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं और ये शब्द वाक्य के बीच में क्रिया से पूर्व रखते हैं, जैसे –

What are you doing ?
तुम क्या कर रहे हो ?
When will you go ?
तुम कब जाओगे ?
Where do you live ?
तुम कहां रहते हो ?

2. वे वाक्य जो do, does, did, has, have, had, is, are, am, was, were, will, shall आदि से शुरू होते हैं। परोक्ष कथन में अंग्रेजी में उपवाक्य if या whether से शुरू होते हैं। इनका अनुवाद करते समय हिंदी के आरंभ में 'क्या' का प्रयोग करते हैं, जैसे –

Do you go ?
क्या तुम जाते हो ?
Have you read this book ?
क्या तुमने यह पुस्तक पढ़ी है ?
Will he go ?
क्या वह जाएगा ?
He asked me whether if I was going to Varanasi ?
उसने मुझसे पूछा कि क्या में वाराणसी जा रहा हूँ ?

4. **<u>आज्ञासूचक वाक्य (Imperative sentence) -</u>** आज्ञा सूचक वाक्यों में किसी कर्म के लिए आज्ञा, अनुमति दी जाती है अथवा अनुरोध, मनाही का प्रस्ताव किया जाता है। अंग्रेजी में ये वाक्य क्रिया से ही शुरू होते हैं। कभी-कभी इनमें 'Please' या 'Kindly' का भी प्रयोग किया जाता है। मनाही वाले वाक्यों में प्रारंभ में 'do not' का प्रयोग होता है। प्रस्ताव सूचक वाक्यों में प्रारंभ में ही 'Let' का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में 'Please' और 'Kindly' के लिए 'कृपया' तथा 'do not' के लिए 'न' अथवा 'मत' तथा let के लिए आओ, आइए, चलो, चलें आदि का प्रयोग करते हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ वाक्यों के अनुवाद देखें –

Please, get out of the room.
कृपया कमरे से बाहर चले जाएं।
Wrap these things in paper.
इन चीजों को कागज़ में लपेट लो।
Do not go to Lucknow.
लखनऊ मत जाओ।
. Let us play in the sun.
आओ (चलें) घूप में खेलें।

5. **<u>इच्छा सूचक वाक्य (Optative sentence)</u>** - इच्छा सूचक वाक्य वे होते हैं जिनमें आशीर्वाद दिया जाता है या इच्छा प्रकट की जाती है। आशीर्वाद सूचक वाक्य may से शुरू होते हैं, जबकि इच्छा सूचक वाक्य would से शुरू होते हैं। जैसेः-

1. May you live long.
2. Would that I were a king.

आशीर्वाद जैसे वाक्यों का हिन्दी में अनुवादक करते समय 'ईश्वर करे', 'भगवान करें' आदि से प्रारंभ कर आशीर्वाद की बात कहनी चाहिए। वाक्य संख्या 1 का अनुवाद इस प्रकार कर सकते हैं -

ईश्वर करे आप दीर्घायु हों।
या
ईश्वर आप को दीर्घायु करे।

इच्छा सूचक वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद अच्छा होता है, 'काश' आदि शब्दों से आरंभ करते हैं। क्रम सं. 2 पर उल्लिखित वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है -

काश, मैं राजा होता।
या
क्या ही अच्छा होता, मैं राजा होता।

6. **<u>आश्चर्य सूचक वाक्य (Exclamatory sentence)</u>** - प्रसन्नता, हर्ष, खेद, विस्मय आदि प्रकट करने वाले वाक्यों को आश्चर्य सूचक वाक्य कहते हैं। वाक्य what, how, alas, hurrah आदि से शुरू होते हैं और इनमें विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) का प्रयोग होता है, जैसे -

1. How pleasant the weather is!
2. What a piece of work is man!
3. Alas! He is dead.
4. Hurrah! The last bell has gone.

ऐसे वाक्यों का हिंदी अनुवाद करते समय आकांक्षा सूचक शब्दों के लिए 'कितना', 'कैसा', 'कैसी' आह! अफसोस! अहा! आदि का प्रयोग करते हैं। उपर्युक्त चारों वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है —

1. मौसम कितना अच्छा है!
2. मनुष्य (सिरजनहार की) कैसी अद्‌भुत रचना है!
3. अफसोस! वह मर गया है।
4. अहा, छुट्‌टी का घंटा बज गया है!

7. **<u>प्रेरणार्थी क्रियाओं से मुक्त वाक्य</u>** - जब हम कोई कार्य स्वयं न करके दूसरे से कराते हैं, तब अंग्रेजी में have, get, make या cause का प्रयोग करते हैं। इसमें कर्ता स्वयं कार्य न करके क्रिया का प्रेरक होता है अथवा उसका कारण बनता है। ऐसे वाक्यों का अनुवाद करते समय मूल रचना के प्रेरणात्मक स्वरूप को बनाए रखने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए, जैसे –

1. The illiterate man has got a letter written - निरक्षर व्यक्ति ने पत्र लिखवाया है।
2. Get this application signed by your class leader - इस प्रार्थना पत्र पर अपने वर्ग अध्यापक के हस्ताक्षर कराओ।
3. I made the horse run fast - मैंने घोड़े को तेज दौड़ाया।
4. He had the dishes laid on the table – उसने मेज पर थालियां लगवा दीं।
5. He caused me weep - उसने मुझे रुला दिया।

8. **<u>संकेत सूचक (शर्तयुक्त) वाक्य (conditional sentence)</u>** - शर्तयुक्त वाक्यों में प्रायः एक प्रधान उपवाक्य तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य होता है, जिनको if से जोड़ा गया होता है। इस प्रकार के वाक्य तीन तरह के होते हैं -

(क) ऐसे वाक्य जबकि शर्त पूर्ण भी हो सकती है और नहीं भी, जैसे –

1. If you work hard, you will win a scholarship.
2. If he comes, I shall to.

अंग्रेजी में if से जुड़ा हुआ उपवाक्य हमेश present indefinite tense में होता है, जबकि प्रधान उपवाक्य Future Indefinite tense में होता है। हिन्दी में अनुवाद करते समय ऐसे स्थलों पर दोनों उपवाक्यों की क्रियाएं भविष्यकाल में रखी जाती हैं, जैसे उपर्युक्त वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा -

1. यदि तुम परिश्रण करोगे तो छात्रवृत्ति प्राप्त कर लोगे।
2. यदि वह आएगा तो मैं जाऊँगा।

(ख) ऐसे वाक्य जिनमें शर्त पूर्ण होने की संभावना नहीं होती, केवल शर्त पूर्ण होने की कल्पना होती है, जैसे - if I would go college I should see the principal. यदि मैं कॉलेज जाता तो प्रधानाचार्य से मिलता।

(ग) ऐसे वाक्यों का प्रयोग तब होता है जब भूतकाल में शर्त पूर्ण न हुई हो, जैसे - If you had come in time, I would have helped you. यदि आप समय पर आते तो मैं आपकी सहायता करता।

इस वाक्य को अंग्रेजी में कभी-कभी इस प्रकार भी लिखा जाता है - Had you come in time I would have helped you.

कुछ वाक्यों में Should का प्रयोग वाक्य के प्रारंभ में करके शर्त का निर्देश किया जाता है, जैसे Should an employee exercise an option for fixation of his pay under FR 22(1)(i). इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार होगा - यदि कोई कर्मचारी मूल नियम 22(1)(i) के अंतर्गत अपने वेतन के निर्धारण के लिए विकल्प दे तो .....।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वाक्य भाषा की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई है। अनुवाद के लिए हिन्दी-अंग्रेजी वाक्य-संरचना और इससे जुड़ी सभी व्याकरणिक कड़ियों का समुचित अध्ययन अपेक्षित है।